



राजेन्द्र कौनी-1 है कंगनी की उत्कृष्ट किस्म

आशीष राय*, सतीश कुमार सिंह**, अरविन्द कुमार सिंह***
और अंशु गंगवार****

बिहार के किसान एक बार फिर श्रीअन्न की खेती की ओर लौटने लगे हैं। इस कड़ी में जायद और खरीफ में श्रीअन्न की फसल भी लहलहाएगी। बीते वर्ष, केवीके परसौनी द्वारा राजेन्द्र कौनी-1 का परीक्षण किया गया। अब से तीन-चार दशक पूर्व जिले के किसान बड़ी मात्रा में श्रीअन्न की खेती करते थे। उस समय बाजार उपलब्ध नहीं होने के कारण किसान इसकी खेती से विमुख हो गए। अब जब सरकार श्रीअन्न की खेती को बढ़ावा देने में जुटी है, तो किसान भी जागरूक हुए हैं। राजेन्द्र कौनी-1 कंगनी की एक किस्म है। इसकी खेती में खाद व पानी की कम आवश्यकता पड़ती है एवं यह कम समय में पकने वाली फसल है, जो 80 दिनों में तैयार हो जाती है।



राजेन्द्र कौनी-1, कंगनी की यह किस्म किसानों के लिए उन्नत फसल के रूप में देखी जाने लगी है। कम समय में तैयार होने वाली यह फसल पोषण से भरपूर है। इसे आहार में शामिल कर शिशु स्वस्थ रह सकते हैं। कृषक इसका आसानी से उत्पादन कर सकते हैं।

खेत का चयन एवं तैयारी

इसकी अच्छी पैदावार के लिए हल्की दोमट मृदा वाली भूमि सर्वोत्तम रहती है। यह दोमट मृदा में जहां जल निकास का अच्छा

प्रबंध हो, भली प्रकार से उगाई जा सकती है। इसे ऊसर मृदा में भी उगाया जा सकता है। मृदा में नमी धारण करने की अच्छी शक्ति



राजेन्द्र कौनी-1 की बालियां दर्शाता किसान

*विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान) कृषि विज्ञान केन्द्र; **प्राध्यापक (पादप एवं प्रजनन विभाग); ***वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र; ****विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा एवं जल अभियांत्रिकी) कृषि विज्ञान केन्द्र, परसौनी, पूर्वी चंपारण, डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर (बिहार)

होनी चाहिए। खेत में एक जुताइयां मृदा पलटने वाले हल से तथा दो जुताई कल्टीवेटर से करनी चाहिए।

बीज दर एवं बोने की विधि

इसकी अच्छी पैदावार के लिए 4-6 कि.ग्रा./हैक्टर बीज की आवश्यकता पड़ती है। बुआई को सीडड्रिल से या हल के पीछे पंक्तियों में बीज गिराकर किया जा सकता है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 22.5 सें.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 7.5 सें.मी. होनी चाहिए।

बुआई

इसके बोने का उपयुक्त समय मई से जुलाई महीने का होता है।

खाद एवं उर्वरक

इसकी अच्छी उपज के लिए 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 20 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करना चाहिए। आधी मात्रा नाइट्रोजन की तथा पूरी मात्रा सुपर फॉस्फेट एवं पोटाश की, फसल की बुआई करते समय बीज के पास से 4-5 सें.मी. की दूरी पर कूड़ बनाकर डालनी चाहिए। इसके अलावा इन्हें खेत में छिड़ककर मृदा में मिला देना चाहिए। जैविक एवं रासायनिक दोनों ही प्रकार की खाद इसके लिए उपयुक्त रहती है। बुआई से पूर्व 100 किंव./हैक्टर गोबर की खाद देना लाभदायक है। नाइट्रोजन की एक चौथाई मात्रा बुआई के 30 दिनों बाद एवं शेष एक चौथाई मात्रा का बुआई के 50 दिनों बाद खड़ी फसल में छिड़काव करना चाहिए। नाइट्रोजन का प्रयोग वर्षा होने के बाद या हल्की सिंचाई के बाद करना चाहिए।

सिंचाई

यह वर्षा आधारित फसल है। इसमें प्रायः सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। वर्षा न होने पर दो हल्की सिंचाई की जा सकती हैं। पहली सिंचाई बुआई के 30 दिनों बाद एवं दूसरी सिंचाई बुआई के 50 दिनों बाद करनी चाहिए।

निराई-गुड़ाई

बीज बोने के 20 दिनों बाद पहली बार निराई-गुड़ाई की जाती है। पंक्तियों में फसल बोने पर निराई-गुड़ाई हल या हैरो द्वारा की जाती है। कुल मिलाकर दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होती हैं।

पौधा संरक्षण

राजेन्द्र कौनी-1 में रोग एवं कीटों द्वारा कोई नुकसान नहीं होता है। इस कारण इसमें पौधा संरक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती है।